ब्रजेश माथुर

ई-मेल-brijesh50@gmail.com

चरित्र

अ, ब और स। तीनों के सम्बन्धी शहर के इकलौते सरकारी अस्पताल भर्ती थे। उनका परस्पर यही सम्बन्ध था। अस्पताल के पोर्च में बैठे वे वार्तालाप कर रहे थे।

"इस अस्पताल में कितनी गंदगी है! मरीज तो मरीज, यहाँ स्वस्थ आदमी का साँस लेना दूभर है।" अ ने कहा।

"भाईसाहब, यह अस्पताल ही नहीं, बल्कि ये पूरा शहर गंदगी से अटा पड़ा है। यहाँ के और नगर निगम के, सभी सफाई कर्मचारी महा कामचोर हैं।" ब ने बात को विस्तार दिया।

"मैं तो कहता हूँ , ऐसे कामचोरों को तुरन्त नौकरी से निकाल देना चाहिए। यह शहर तो वाक़ई रहने लायक़ नहीं रहा अब!" स ने अपनी बहुमूल्य राय रखी।

तभी " चाय-चाय" की आवाज़ लगाता, केतली को हाथ में लहराता हुआ-सा एक किशोर वहाँ आ गया। तीनों ने उससे प्लास्टिक के कपों में चाय ली। धीरे-धीरे पी। खाली कपों को वहीं पोर्च में बेतरतीबी से फेंका; और फिर से अस्पताल व शहर की गंदगी को कोसने में मशगूल हो गए।

वंदना सहाय

ई-मेल-:vandanasahai29@gmail.com

तमगे

मेजर आदित्य सिंह देश के लिए शहीद हो गये थे। अब उनके घर की जरूरत उनके तीनों बेटों में से किसी को नहीं रह गयी थी। उन्होंनें मिलकर विचार किया कि अपने पिता का वह मकान किसी बिल्डर को देकर, उससे आए मुनाफे को वे आपस में बाँट लेंगे।

घर की सारी चीज़ें कबाड़ वाले को बुलाकर जैसे-तैसे दामों पर बेच दीं। बस, रह गये शो केस में पड़े वे तमगे, जिनका परिचय वे अपने शौर्य का बखान करते हुए घर आये मेहमानों से करते थे। उन तमगों को देख एकाएक बेटों के मुँह से निकल पड़ा, "अब इन तमगों का क्या करें?"

बड़े वाले ने कहा-"मेरा घर तो कस्टमाइज़्ड है। जगह के हिसाब से हर जगह कोई न कोई शो पीस लगी है। इन अतिरिक्त चीज़ों को रखूँगा तो घर कबाड़खाना दिखेगा।"

दूसरे बेटे ने कहा, "हाँ, मैंने भी घर के महँगे वाले शो पीसेज़ अलग निकालकर रख लिए हैं। अगर और कुछ साथ ले गया तो फ्लाइट में सामानों का अतिरिक्त किराया देना पड़ेगा।"

अब छोटे वाले बेटे ने कहा, "हाँ, मैंने भी जब इन तमगों के बारे में कबाड़ वाले से पूछा तो उसने बताया कि इन तमगों का मूल्य नहीं के बराबर है। इन्हें मत बेचिये, क्योंकि ये व्यर्थ हैं।"